मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

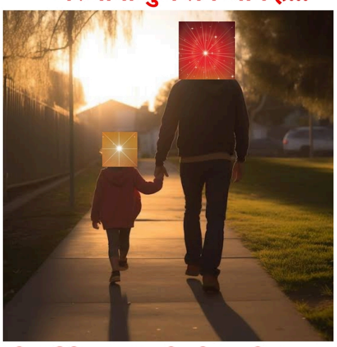

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

24-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - अब वापिस घर जाना है, इसलिए देह-भान को भूल अपने को अशरीरी आत्मा समझो, सबसे ममत्व मिटा दो"

Mind very well...

प्रश्नः- संगमयुग पर तुम बच्चे बाप से कौन सा अक्ल सीखते हो?

उत्तर:- (1) तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें, (2) अपनी तकदीर ऊंची कैसे बनायें, यह अक्ल अभी ही तुम सीखते हो। जो जितना योगयुक्त और ज्ञान युक्त बने हैं, उनकी उतनी उन्नति होती रहती है। उन्नति करने वाले बच्चे कभी भी छिप नहीं सकते। बाप हर एक बच्चे की एक्ट से समझते हैं कि कौन-सा बच्चा अपनी ऊंची तकदीर बना रहा है।

Simple Math..

गीत:-मरना तेरी गली में... Click

मरना तेरी गली में
मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में
मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में
मरना तेरी गली
मिट जाएगी हमारी, दुनिया तेरी गली में
दुनिया तेरी गली में
मरना तेरी गली में

आए हैं तेरे दर पे हम ज़िन्दगी लुटाने
तू देखें या ना देखें
तू जाने या ना जाने
पूरा करेंगे हम तो, वादा तेरी गली में
मरना तेरी गली में

तेरे लिए मैं जहाँ से टकराऊँगा
सब कुछ खोके तुझको ही पाऊँगा
दिल बन के, मैं दिल धडकाऊँगा
मैं तेरा बन जाऊँगा

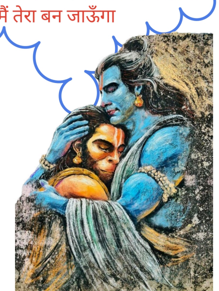

Ultimate love

दिल से तेरी मोहब्बत कम
उम्र भर ना होगी
हम तुझपे मर मिटेंगे
तुझको खबर ना होगी
मरने के बाद होगा चर्चा तेरी गली में
मरना तेरी गली में
मिट जाएगी हमारी, दुनिया तेरी गली में
दुनिया तेरी गली में
मरना तेरी गली में

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

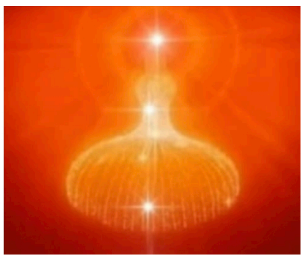

ओम् शान्ति। सब बच्चों ने यह गीत सुना। बच्चे कहने से सर्व सेन्टर्स के बच्चे जान जाते हैं कि बाबा हम ब्राह्मणों के लिए कहते हैं कि बच्चे यह गीत सुना - जीते जी गले का हार बनने के लिए अर्थात् मूलवतन में जाए बाबा के घर में रहने के लिए। वह शिवबाबा का घर है ना, जिसमें सब सालिग्राम रहते हैं। बच्चे, ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी जानते हैं कि बरोबर वही बाबा आये हुए हैं। कहते हैं - अभी तुमको अशरीरी बनना है अर्थात् देह के भान को भूलना है। यह पुरानी दुनिया तो मिट जायेगी। इस शरीर को तो छोड़ना है अर्थात् सबको छोड़ना है क्योंकि यह दुनिया ही खत्म होनी है। तो अब चलना है वापिस घर। सभी बच्चों को अब खुशी होती है क्योंकि आधाकल्प घर जाने के लिए बहुत धक्के खाये हैं। परन्तु रास्ता मिला नहीं! और ही भक्ति मार्ग का चहचटा (दिखावा) देख मनुष्य फँस पड़ते हैं। यह है भक्ति मार्ग की दुबन (दलदल) जिसमें मनुष्य मात्र गले तक फँस गये हैं। अब बच्चे कहते हैं - बाबा हम पुरानी दुनिया, पुराने शरीर को भूलते हैं।

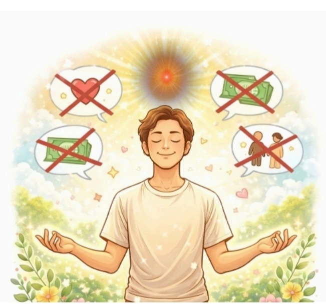

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

24-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अब आपके साथ अशरीरी बन घर चलेंगे। सबकी बुद्धि में है परमपिता परमात्मा परमधाम से आये हैं, हमको ले जाने के लिए। सिर्फ कहते हैं तुम पवित्र बन हमको याद करो। जीते जी मरना है। तुम जानते हो वहाँ घर में आत्मायें रहती हैं। सो भी आत्मा तो बिन्दी है। निराकारी दुनिया में सब आत्मायें चली जायेंगी, जितने मनुष्य हैं उतनी आत्मायें वहाँ होंगी। आत्मायें उस महतत्व की कितनी जगह लेती हैं। शरीर तो इतना बड़ा है, कितनी स्पेस लेता है? बाकी आत्मा को कितनी जगह चाहिए! हम आत्मायें कितनी छोटी जगह लेंगी? बहुत थोड़ी। बच्चों को यह सब बातें बाप द्वारा सुनने का सौभाग्य अभी मिलता है। बाप ही बतलाते हैं कि तुम नंगे (बिना शरीर के) आये थे फिर शरीर धारण कर पार्ट बजाया, अब फिर जीते जी मरना है, सबको भूलना है। बाप आकर मरना सिखलाते हैं। कहते हैं अपने बाप को, अपने घर को याद करो। खूब पुरुषार्थ करो। योग में रहने से पाप नाश होंगे। फिर आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेगी इसलिए बाप राय देते हैं -

Point to ponder deeply...

स्वयं भगवान् से

इसको साधारण बात नही समझो

Feel the Force

Experiment:
1 किलो सरसों को एक बर्तन में भरना फिर विजुलाइज करना कि यह सब आत्माएं है और अगर हो सके तो उन सरसों के दानो को गिनना के कितने दाने हैं 1 किलो में। (अकेले हो तो भले थोड़े-थोड़े करके गिनना, गिनने में कुछ दिन भले लगे क्योंकि एक साथ गिनने में बहुत समय जाएगा। किंतु अगर आप ग्रुप में हो तो कुछ मिनिटों में हो जाएगा।)
फिर अंदाज लगाना कि अगर 800 करोड़ ऐसे सरसों के दाने हो तो वह सब कितने होगे।
finally अब यह visualise करो कि यह सब आत्माएं है तो परमधाम का चित्र आपके सामने आ जाएगा।

share your experience on merababa2809@gmail.com
We will share it With All
आपके अनुभव से औरों को भी फायदा मिलेगा।

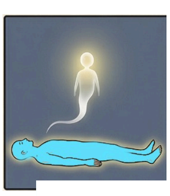

With Great Determination/दृढ़ता

Points: ज्ञान

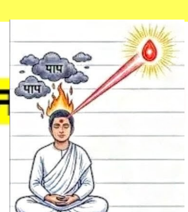

धारणा

Direction of The Almighty

कल्प पहले भी कहा था कि देह के सब सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो। सबका एक बाप तो वह है ना।

चढ़ाओ नशा...

तुम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख वंशावली बच्चे हो, जो ज्ञान पाते रहते हो। शिव के बच्चे तो हो ही। यह तो सबको निश्चय है - हम भगवान के बच्चे हैं।

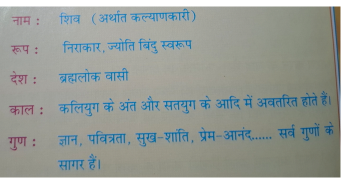
नाम : शिव (अर्थात कल्याणकारी)
रूप : निराकार, ज्योति बिंदु स्वरूप
देश : ब्रह्मलोक वासी
काल : कलियुग के अंत और सतयुग के आदि में अवतरित होते हैं।
गुण : ज्ञान, पवित्रता, सुख-शांति, प्रेम-आनंद...... सर्व गुणों के सागर हैं।

परन्तु उनके नाम, रूप, देश, काल को भूलने के कारण, भगवान से किसका भी इतना लव नहीं रहता है। किसको दोष नहीं देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है।

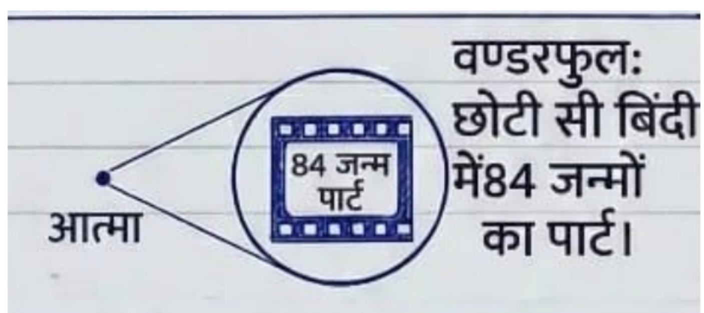

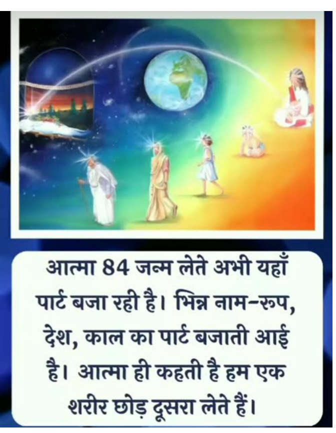

बाप समझाते हैं कि तुम आत्मा कितनी छोटी बिन्दी हो, उसमें 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है।

कितना वण्डर है। आत्मा कैसे शरीर लेकर पार्ट बजाती है। अभी तुमको बेहद के पार्ट का पता पड़ा है।

How lucky and Great we are...!

यह ज्ञान और कोई को नहीं है। तुम भी देह-अभिमानी थे। अभी कितना पलटा खाया है। वह भी हर एक की तकदीर पर है। कल्प पहले वाली तकदीर का अब साक्षात्कार हो रहा है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

जितना जिसके भाग्ये में लिखा उतना ही पाता है,
मेरे भोले दरबार में सबका खाता है,

24-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

दुनिया में कितने ढेर मनुष्य हैं, हर एक की अपनी तकदीर है। जैसा-जैसा जिसने कर्म किया है उस अनुसार दु:खी, सुखी, साहूकार, गरीब बनते हैं। बनती आत्मा है। आत्मा कैसे सुख में आती है, फिर दु:ख में आती है, यह बाप बैठ समझाते हैं।

तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का अक्ल बाप ही सिखाते हैं कल्प पहले मुआफिक। जितना जिसने अक्ल पाया है उतना ही अब पा रहे हैं। पिछाड़ी तक हर एक की तकदीर को समझ जायेंगे। फिर कहेंगे कल्प-कल्प ऐसे ही हर एक की तकदीर रहेगी।

Exclusive Authority of Shiv baba

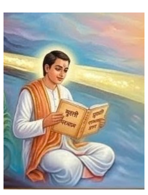

जो अच्छा योगयुक्त, ज्ञान युक्त होगा - वह सर्विस भी करता रहेगा। पढ़ाई में सदैव उन्नति होती रहती है। कोई बच्चे जल्दी उन्नति को पा लेते हैं, कोई बहुत माथा खपाते हैं। यहाँ भी ऐसे हैं। कल्प पहले मुआफिक जो-जो उन्नति करते हैं, वह छिपे नहीं रह सकते। बाप तो जानते हैं ना - सबका कनेक्शन शिवबाबा से है। यह भी बच्चों की एक्ट देखते समझ जाते हैं, तो वह भी देखते हैं। इनसे भल कोई छिपाये परन्तु शिवबाबा से तो छिपा नहीं सकेंगे। भक्तिमार्ग में ही परमात्मा से नहीं छिपा

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Important is this No matter where you are...

तन को जोगी सब करें,
मन को बिरला कोई.
सब सिद्धि सहजे पाइए,
जे मन जोगी होइ.

अर्थ : SmitCreation.com
शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है. यदि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं.

सकते तो ज्ञान मार्ग में कैसे छिपा सकते। बाप समझाते रहते हैं, पढ़ाई तो बहुत सहज है। कर्म भी करना है। रहना भी मित्र सम्बन्धियों के पास पुरानी दुनिया में है। वहाँ रहकर मेहनत करनी है। यहाँ रहकर पुरुषार्थ करने वालों से वहाँ घर में रह पुरुषार्थ करने वाले तीखे हो सकते हैं। अगर ऐसी लगन है तो। शास्त्रों में अर्जुन और भील का मिसाल है ना। भल भील बाहर का रहने वाला था लेकिन अभ्यास से वह अर्जुन से भी तीर चलाने में होशियार हो गया। तो गृहस्थ व्यवहार में रह कमल फूल समान रहना है। यह भी तुम मिसाल देखेंगे। गृहस्थ व्यवहार में रह बहुत अच्छी सर्विस कर सकते हैं। वह जास्ती वृद्धि को पाते रहेंगे। यहाँ रहने वालों को भी माया छोड़ती नहीं है। ऐसे नहीं कि बाबा के पास आने से छूट जाते हैं। नहीं, हर एक का अपना-अपना पुरुषार्थ है। गृहस्थ व्यवहार में रहने वाले यहाँ रहने वालों से अच्छा पुरुषार्थ कर सकते हैं। बहुत अच्छी बहादुरी दिखा सकते हैं, उनको ही महावीर कहा जाता है, जो गृहस्थ व्यवहार में रहकर कमल फूल समान बनकर

m.m.m....imp.

Shiv भगवान उवाच:

कर के देखो, बाबा यूं ही नहीं कहते

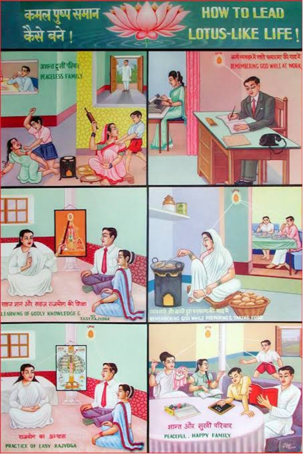

दिखाये। कहेंगे कि बाबा आपने तो छोड़ा है। बाबा कहते - हमने कहाँ छोड़ा है, मुझे ही छोड़कर गये हैं। बाबा तो किसको भी छोड़ नहीं आये। घर में और ही बच्चे आ गये। बाकी कन्याओं के लिए तो बाबा कहते हैं कि तुम यह ईश्वरीय सर्विस करो। यह भी बाबा है, वह भी बाबा है। कुमार भी बहुत आये लेकिन चल न सके। कन्यायें फिर भी अच्छी हैं। कन्या 100 ब्राह्मणों से उत्तम गिनी जाती है। तो कन्या वह जो 21 कुल का उद्धार करे, ज्ञान के बाण मारे। बाकी जो गृहस्थ में रहते वह भी बी. के. ठहरे। आगे चल उन्हों का भी बंधन खलास हो जायेगा। सर्विस तो करनी है ना। कई सर्विस करने वाले बच्चे बापदादा के दिल पर चढ़े हुए हैं, जो हजारों का कल्याण कर रहे हैं। तो ऐसे सर्विसएबुल बच्चों पर आशीर्वाद भी आती रहेगी। वे दिल पर चढ़े रहेंगे। जो दिल पर हैं वही तख्त पर बैठेंगे। बाबा कहते आपस में मिलकर युक्ति रचते रहो, सबको मार्ग दिखाने की। चित्र भी बनते रहते हैं। यह सब प्रैक्टिकल बातें हैं।

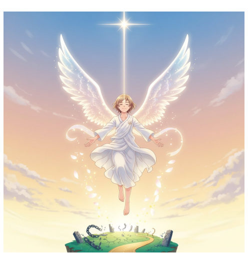

समझा?

ये पक्का समझ लो..

s: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

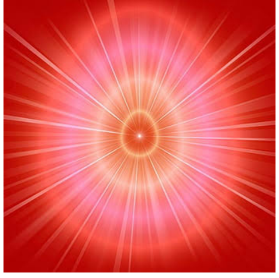

24-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अभी तुम समझाते हो कि परमपिता परमात्मा निराकार है, वह भी बिन्दी है। परन्तु वह नॉलेजफुल, पतित पावन है। आत्मा भी बिन्दी है। बच्चा फिर भी छोटा होता है। बाप और बच्चे में फर्क तो होता है ना। आजकल तो 15-16 वर्ष वाले भी बाप बन जाते हैं। तो भी बच्चा उनसे छोटा ही ठहरा ना। यहाँ वन्डर देखो - बाप भी आत्मा, बच्चा भी आत्मा। वह है सुप्रीम आत्मा, नॉलेज-फुल। बाकी सब अपनी पढ़ाई अनुसार नीच वा ऊंच पद पाते हैं। सारा मदार है पढ़ाई पर। अच्छा कर्म करने से ऊंच पद पा लेते हैं। अभी तुम बच्चों को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। स्वर्ग में सिर्फ भारत ही था और कोई खण्ड नहीं था। तो छोटी न्यु इन्डिया में अपना स्वर्ग दिखायें। जैसे द्वारिका नाम नहीं, लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी का राज्य लिखना चाहिए। बुद्धि भी कहती है सतयुग में पहले डीटी डिनायस्टी का राज्य होगा। उनके गाँव होंगे, छोटे-छोटे इलाके होंगे। यह भी विचार सागर मंथन करना है। साथ-साथ शिवबाबा से बुद्धि का योग भी लगाना है।

How Lucky we are...!

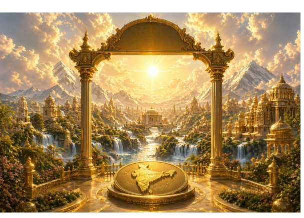

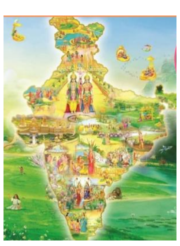

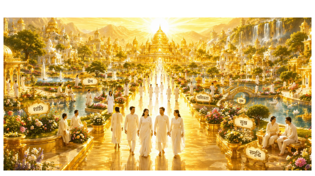

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

24-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "ब

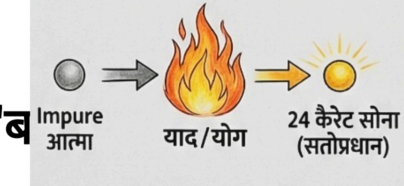

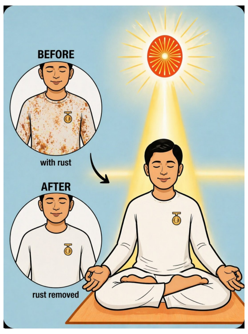

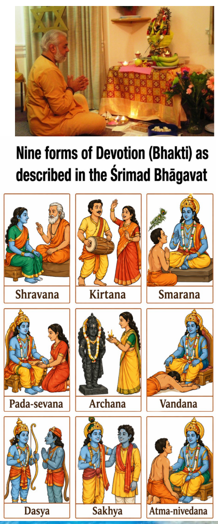

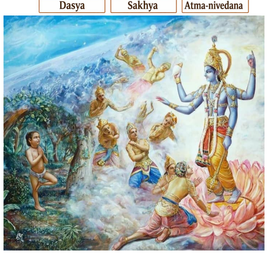

हम याद से ही बादशाही लेते हैं। याद से ही कट उतरनी है, इसमें ही सारी मेहनत है। कइयों की बुद्धि बाहर में धक्का खाती रहती है, यहाँ बैठे भी सारा समय याद में नहीं रह सकते हैं, बुद्धि और तरफ चली जायेगी। भक्ति मार्ग में भी ऐसे होता है। श्रीकृष्ण की भक्ति करते-करते बुद्धि और तरफ चली जाती है। नौधा भक्ति वाले दीदार के लिए बहुत मेहनत करते हैं। कितने घण्टे बैठ जाते हैं कि श्रीकृष्ण के सिवाए और कोई याद न आये, बहुत मेहनत है। इसमें 8 की और फिर 16108 की माला होती है। वह तो लाखों की माला भी दिखाते हैं। लेकिन ज्ञान मार्ग की माला बहुत कीमती है। भक्ति मार्ग की सस्ती है क्योंकि इसमें रूहानी मेहनत है। श्रीकृष्ण को देख खुश हो डांस करते हैं। भक्ति और ज्ञान में रात दिन का फर्क है, तुम्हें यह नहीं समझाया जाता है कि श्रीकृष्ण को याद करने से कट निकलेगी। यहाँ तो समझाया जाता है कि जितना बाप को याद करेंगे उतना पाप नाश होंगे।

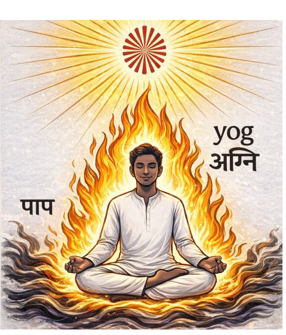

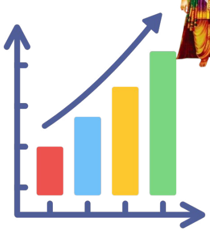

"दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है,
मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है।"
- निदा फ़ाज़ली

कहीं हमारी भी ऐसी ही स्थिति नहीं है ना कि जब स्वयं भगवान मिल गए हैं तो उनको मिट्टी के समान समझ चल रहे हैं...?

24-04-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

How Great we are...!

इसको साधारण बात नही समझो

तुम बच्चे अभी योगबल से विश्व के मालिक बनते हो। यह किसको स्वप्न में भी ख्याल नहीं होगा। लक्ष्मी-नारायण ने कोई लड़ाई आदि नहीं की है। विश्व के मालिक फिर कैसे बने? यह तो तुम बच्चे ही जानते हो। बाप कहते हैं योगबल से तुमको राजाई मिलेगी। परन्तु तकदीर में नहीं है तो तदबीर ही नहीं करते। सर्विसएबुल बनते नहीं हैं। बाबा तो डायरेक्शन देते रहते हैं कि ऐसे-ऐसे प्रदर्शनी करो। कम से कम 150-200 प्रदर्शनियाँ एक दिन में हो जायें। गाँव-गाँव में चक्र लगाओ। जितने सेन्टर्स, उतनी प्रदर्शनियाँ। एक-एक सेन्टर पर प्रदर्शनी होने से समझाने में सहज हो जायेगा। सेन्टर्स भी दिन प्रतिदिन बड़े होते जायेंगे जो चित्र आदि भी रख सकें। चित्रों की भी इन्वेन्शन निकलती रहती है। वैकुण्ठ का चित्र खूबसूरत महलों आदि के भारत का बनाना चाहिए। आगे चल समझाने के लिए अच्छे-अच्छे चित्र निकलते जायेंगे। वानप्रस्थ अवस्था वाले घूमते फिरते भी सर्विस करते रहें, जिनका भाग्य उदय होगा वह निकलेंगे। कई बच्चे कुकर्म कर अपनी आबरू गँवाते हैं, तो यज्ञ की

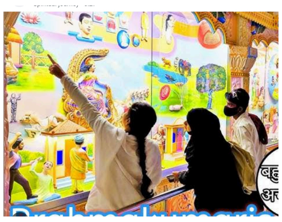

Direction of The Almighty

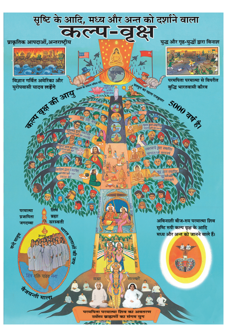

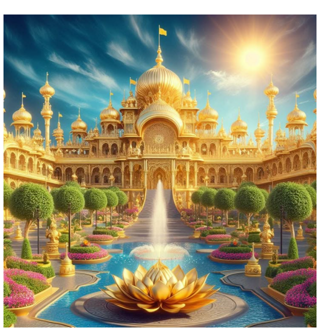

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये पक्का समझ लो..

आबरू (इज्जत) गँवाते हैं। जैसी चलन वैसा पद। जो बहुतों को सुख देते हैं, उनका तो नाम गाया जाता है ना। अभी सर्वगुणों में सम्पन्न तो नहीं बने हो ना। कोई-कोई बड़ी अच्छी सर्विस कर रहे हैं। ऐसे-ऐसे के नाम सुन बाबा खुश होते हैं। सर्विसएबुल बच्चों को देख बाबा खुश होगा ना। अच्छी सर्विस में मेहनत करते रहते हैं। सेन्टर्स भी खोलते रहते हैं, जिससे हजारों का कल्याण होना है। उनके द्वारा फिर बहुत निकलते जायेंगे। सम्पूर्ण तो कोई नहीं बना है। भूलें भी कुछ न कुछ हो जाती है। माया छोड़ती नहीं है। जितनी सर्विस कर अपनी उन्नति करेंगे उतना ही दिल पर चढ़ेंगे। उतना ही ऊंच पद पायेंगे। फिर कल्प-कल्प ऐसा ही पद होगा। शिवबाबा से तो कोई छिपा नहीं सकता। अन्त में हर एक को अपने कर्मों का साक्षात्कार तो होता है। फिर क्या कर सकेंगे! ज़ार-ज़ार रोना पड़ेगा इसलिए बाबा समझाते रहते हैं कि ऐसा कोई भी कर्म नहीं करो जो अन्त में सज़ा के भागी बनो, पश्चाताप करना पड़े। परन्तु कितना भी समझाओ तकदीर में नहीं है तो तदबीर करते

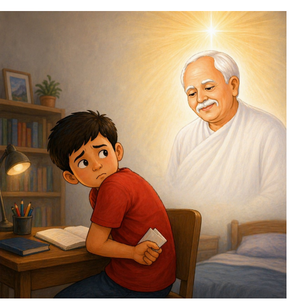

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

May I have your Attention Please..!

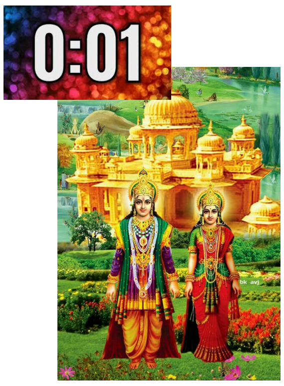

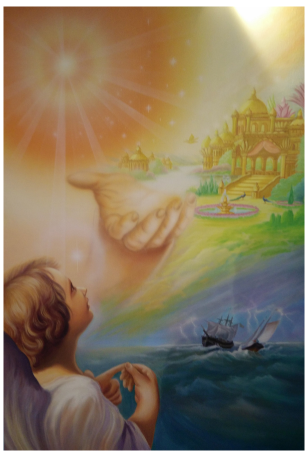

ही नहीं। आजकल के मनुष्य तो बाप को जानते नहीं। भगवान को याद करते हैं लेकिन जानते नहीं। उनका कहना नहीं मानते। अभी उस बेहद के बाप से तुम्हें सतयुगी स्वराज्य का वर्सा मिलता है सेकण्ड में। शिवबाबा का नाम तो सभी पसन्द करते हैं ना। बच्चे जानते हैं कि उस बेहद के बाप से स्वर्ग का वर्सा मिल रहा है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अपनी चलन से बाप का वा यज्ञ का नाम बाला करना है, ऐसा कोई कर्म न हो जो बाप की इज्जत जाये। सर्विस से अपना भाग्य आपेही बनाना है।

Never ever try to under estimate the power of सेवा
संपूर्णता का मार्ग सेवा के गलियारों से होकर ही गुजरता है इसलिए सेवा को कभी भी नजर अंदाज नहीं करना है।
सभी प्रकार की सेवा (तन मन धन श्वास संकल्प...) किए बिना संपूर्ण नहीं बन सकते - यह पक्का समझ लो।

2) बाप समान कल्याणकारी बन सर्व की आशीर्वाद ले आगे नम्बर लेना है। गृहस्थ व्यवहार में रह कमल फूल समान रहने की अच्छी बहादुरी दिखानी है।

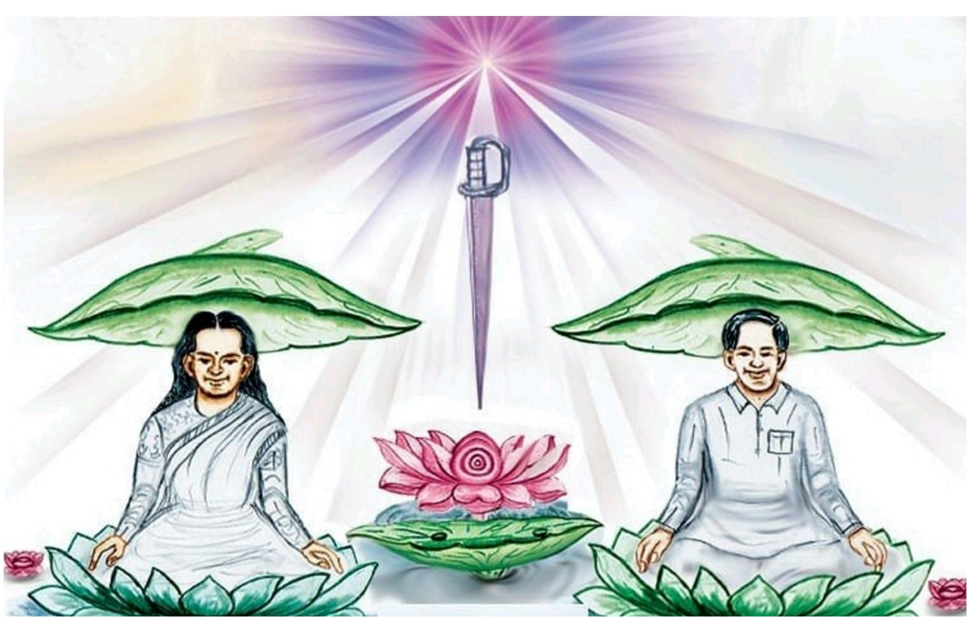

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument　　Outcome/Output/Result

24-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: सतोप्रधान स्थिति में स्थित रह सदा सुख शान्ति की अनुभूति करने वाले डबल अहिंसक भव

Finale Achievement

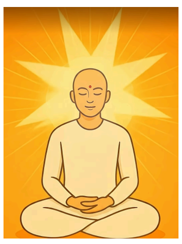

सदा अपने सतोप्रधान संस्कारों में स्थित रह सुख-शान्ति की अनुभूति करना - यह सच्ची अहिंसा है। (Definition of)

(Definition of) हिंसा अर्थात् जिससे दु:ख-अशान्ति की प्राप्ति हो।

Self Checking

तो चेक करो कि (1) सारे दिन में किसी भी प्रकार की हिंसा तो नहीं करते! यदि कोई शब्द द्वारा किसकी स्थिति को डगमग कर देते हो तो यह भी हिंसा है। (Point to be Noted)

2- यदि अपने सतोप्रधान संस्कारों को दबाकर दूसरे संस्कारों को प्रैक्टिकल में लाते हो तो यह भी हिंसा है इसलिए महीनता में जाकर महान आत्मा की स्मृति से डबल अहिंसक बनो।

very very Subtle Point to understand

स्लोगन:- सत्य के साथ असत्य मिक्स होते ही खुशी गायब हो जाती है।

very Subtle Point to understand

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

बाप समान

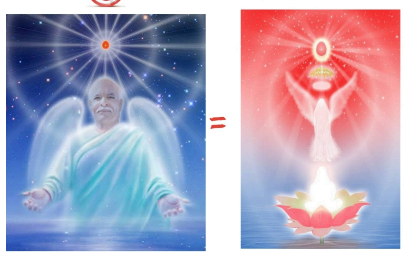

ये अव्यक्त इशारे -

महान बनने के लिए

मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

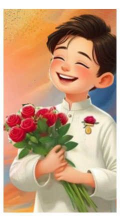

Refer next Page

Feel the Force

आपका एक एक बोल अलौकिक हो, फरिश्तों के समान हो। हर बोल मधुर हो।

इस बात पर अभी अन्डरलाइन करो तब प्रत्यक्षता होगी क्योकि अभी तक वाणी की शक्ति व्यर्थ जा रही है, इसलिए वाणी में जो बाप को प्रत्यक्ष करने का जौहर वा शक्ति होनी चाहिए वह कम है, वाचा को व्यर्थ से बचाओ तो बाप को प्रत्यक्ष करने का आवाज बुलन्द होगा।

Result

एक - संकल्प शक्ति जो सबसे श्रेष्ठ शक्ति है उसको यथार्थ रीति स्वयं प्रति वा सेवा प्रति समय प्रमाण कार्य में लगाने की यथार्थ रीति नहीं है। दूसरा कारण - वाणी की शक्ति को यथार्थ रीति, समर्थ रीति से कार्य में लगाने की कमी। इन दोनों में कमी का कारण है - यूज के बजाय लूज़। शब्दों में अंतर थोड़ा है लेकिन परिणाम में बहुत अंतर पड़ जाता है। बापदादा ने सिर्फ 3-4 दिन की रिजल्ट देखी, टोटल रिजल्ट नहीं देखी। हर एक की 3-4 दिन की रिजल्ट में क्या देखा? 50 परसेन्ट अर्थात् आधा-आधा। संकल्प और बोल में दोनों शक्तियों के जमा का खाता, 50 परसेन्ट आत्माओं का 40 परसेन्ट और व्यर्थ वा साधारण का खाता

Subtle Psychology

60 परसेन्ट देखा। तो सोचो जमा कितना हुआ! ज्यादा वजन किसका हुआ? इसमें भी वाचा के कारण मन्सा पर प्रभाव पड़ता है। मन्सा, वाचा को भी अपनी तरफ खींचती है। आज बापदादा वाणी अर्थात् बोल की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं क्योंकि बोल का सम्बन्ध अपने साथ भी है और सर्व के साथ भी है। और देखा क्या? मन्सा द्वारा याद में रहना है - उसके लिए फिर भी बीच-बीच में प्रोग्राम रखते हैं। लेकिन बोल के लिए अलबेलापन ज्यादा है, इसलिए बापदादा इस पर विशेष अंडरलाइन करा रहे हैं। दो वर्ष पहले बापदादा ने विशेष पुरुषार्थ में सेवा में आगे बढ़ने वाले महारथी आत्माओं को और सभी को तीन बातें बोल के लिए कही थी - "कम बोलो, धीरे बोलो और मधुर बोलो।" व्यर्थ बोलने की निशानी है - वह ज्यादा बोलेगा, मजबूरी से समय प्रमाण, संगठन प्रमाण अपने को कंट्रोल करेगा लेकिन अंदर ऐसा महसूस करेगा जैसे कोई ने शान्ति में चुप रहने लिए बांधा है। व्यर्थ बोल बड़े-ते-बड़ा नुकसान क्या करता है? एक तो शारीरिक एनर्जी समाप्त होती क्योंकि खर्च होता है और दूसरा - समय व्यर्थ जाता है। व्यर्थ बोलने वाले की आदत क्या होगी? छोटी-सी बात को बहुत लम्बा-चौड़ा करेगा और बात करने का तरीका कथा मुआफिक होगा। जैसे रामायण, महाभारत की कथा... इंट्रेस्ट से सुनाते हैं ना। खुद भी रुचि से बोलेगा, दूसरे की भी रुचि पैदा कर लेगा, लेकिन रिजल्ट क्या होती? रामायण, महाभारत की रिजल्ट क्या है? राम बनवास गया, कौरवों और पाण्डवों की युद्ध हुई, कहानी जैसा दिखाते हैं, सार कुछ भी नहीं लेकिन साज़ बहुत रमणीक होता है। इसको कहते हैं कथा। व्यर्थ बोलने वाले माया के प्रभाव के कारण वह कमजोर आत्मा है, उन्हों को सुनने और सुनाने के साथी बहुत जल्दी बनते हैं। ऐसी आत्मा एकान्तप्रिय हो नहीं सकती इसलिए वह साथी बनाने में बहुत होशियार होगा। बाहर से कभी-कभी ऐसे दिखाई देता है कि इन्हों का संगठन पावरफुल और ज्यादा लगता है। लेकिन एक बात सदा के लिए याद रखो कि माया के जाने का

Example

link of this entire Murli

Click

अन्तिम चरण है, इसलिए विदाई लेते-लेते भी अपना तीर लगाती रहती है इसलिए कभी-कभी, कहाँ-कहाँ माया का प्रभाव अपना काम कर लेता है। वह आराम से जाने वाली नहीं है। लास्ट घड़ी तक डॉयरेक्ट नहीं तो इनडायरेक्ट, कडुवा रूप नहीं तो बहुत मीठा रूप और नया-नया रूप धारण कर ब्राह्मणों की ट्रायल करती रहती है। फिर भोले-भाले ब्राह्मण क्या कहते? यह तो बापदादा ने सुनाया ही नहीं था कि इस रूप में भी माया आती है! अलबेलेपन के कारण अपने को चेक भी नहीं करते और सोचते कि बापदादा तो कहते हैं कि माया आयेगी..। आधा अक्षर याद रखते हैं कि माया आयेगी लेकिन मायाजीत बनना है - यह भूल जाते हैं।

Remember it...!

Taunting Way

Check & Change

और बात - व्यर्थ वा साधारण बोल के भिन्न-भिन्न रूप देखे। एक - सीमा से बाहर अर्थात् लिमिट से परे हंसी-मजाक, दूसरा - टोंटिंग वे, तीसरा - इधर-उधर के समाचार इकट्ठा कर सुनना और सुनाना, चौथा - कुछ सेवा-समाचार और सेवा समाचार के साथ सेवाधारियों की कमजोरी का चिंतन - यह मिक्स चटनी और पांचवा - अयुक्तियुक्त बोल, जो ब्राह्मणों की डिक्शनरी में है ही नहीं। यह पांच रूपरेखायें देखी। इन पांचों को ही बापदादा व्यर्थ बोल में गिनती करते हैं। ऐसा नहीं समझो - हंसी-मज़ाक अच्छी चीज़ है। हंसी-मज़ाक अच्छा वह है जिसमें रूहानियत हो और जिससे हंसी-मजाक करते हो उस आत्मा को फायदा हुआ, टाइम पास हुआ या टाइम वेस्ट गया? रमणीकता का गुण अच्छा माना जाता है लेकिन व्यक्ति, समय, संगठन, स्थान, वायुमण्डल के प्रमाण रमणीकता अच्छी लगती है। अगर इन सब बातों में से एक बात भी ठीक नहीं तो रमणीकता भी व्यर्थ की लाइन में गिनी जायेगी और सर्टीफिकेट क्या मिलेगा कि हंसाते बहुत अच्छा है लेकिन बोलते बहुत है। तो मिक्स चटनी हो गई ना। तो समय की सीमा रखो। इसको

Point for Lifetime

Point to Ponder & Inculcate..

कहा जाता है मर्यादा पुरुषोत्तम। कहते हैं - मेरा स्वभाव ही ऐसा है। यह कौन सा स्वभाव है? बापदादा वाला स्वभाव है? तो इसको भी मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे, साधारण पुरुष कहेंगे। बोल सदैव ऐसे हों जो सुनने वाले चात्रक हों कि यह कुछ बोले और हम सुनें - इसको कहा जाता है अनमोल महावाक्य। महावाक्य ज्यादा नहीं होते। जब चाहे तब बोलता रहे - इसको महावाक्य नहीं कहेंगे। तो सतगुरू के बच्चे - मास्टर सतगुरू के महावाक्य होते हैं वाक्य नहीं। व्यर्थ बोलने वाला अपनी बुद्धि में व्यर्थ बातें, व्यर्थ समाचार, चारों ओर का कूड़ा-किचड़ा जरूर इकट्ठा करेगा क्योंकि उनको कथा का रमणीक रूप देना पड़ेगा। जैसे शास्त्रवादियों की बुद्धि है ना इसलिए जिस समय और जिस स्थान पर जो बोल आवश्यक हैं, युक्तियुक्त हैं, स्वयं के और दूसरी आत्माओं के लाभ-लायक हैं, वही बोल बोलो। बोल के ऊपर अटेन्शन कम है, इसलिए इस पर डबल अण्डरलाइन।

Definition

Mind Well

Point for Lifetime

Point of the Day

विशेष इस वर्ष बोल के ऊपर अटेन्शन रखो। चेक करो - बोल द्वारा एनर्जी और समय कितना जमा किया और कितना व्यर्थ गया? जब इसको चेक करेंगे तो स्वत: ही अन्तर्मुखता के रस को अनुभव कर सकेंगे। अंतर्मुखता का रस और बोल-चाल का रस - इसमें रात-दिन का अन्तर है। अन्तर्मुखी सदा भ्रकुटी की कुटिया में तपस्वीमूर्त का अनुभव करता है। समझा!

Most imp

समझना अर्थात् बनना। जब कोई बात समझ में आ जाती है तो वह करेगा जरूर, समझेगा जरूर। टीचर्स तो हैं ही समझदार, तब तो भाग्य मिला है ना। निमित्त बनने का भाग्य - इसका महत्व अभी कभी-कभी साधारण लगता है, लेकिन यह भाग्य समय पर अति श्रेष्ठ अनुभव करेंगे। किसने निमित्त बनाया, किसने मुझ आत्मा को इस योग्य चुना -

Ask within...!

Name	ब्रह्माकुमार गोकुल
समर्पित?	No (Govt job)
From:	Amravati, Maharashtra
Age of body	37
ज्ञान में	6
HLM कब से	1 year
Experience:	ओम् शांति, हम ज्ञान में आये तब कोरोना काल चल रहा था, हमारा शुरुवाती पुरुषार्थ ऑनलाईन ही था। लेकिन ज्ञान मुरली के बहुत सारे महावाक्य हमें समझ में नहीं आते थे। हम जहां रहते थे वहां नजदीक सेंटर भी नहीं था। देरी से ज्ञान में आने से हमारे मन में बहुत उत्साह रहता था, लेकिन हम मुरली को ठीक से समझ नहीं सकते थे इसलिए थोड़ा उदास रहते थे। फिर तिन साल बाद २०२४ में एक बार अचानक हाईलाइटेड मुरली हमें कीसी वाट्सऐप ग्रुप में मिली, जैसे ही हमने पढ़ी और चित्र देखकर बाबा की ज्ञानयुक्त राजयुक्त बातें क्लियर समझ आने लगी , लेकिन उस ग्रुप में रोजाना वह मुरली नहीं मिलती थी अब भी नहीं मिलती, लेकिन जब भी मिलती हम बड़े उत्साह से पढ़ते रहते थे, हाइलाइटेड मुरली के कारण ही हमारे ज्ञान में, योग में, पुरुषार्थ में सब बातों में फायदा हुआ है।अब हमें बाबा की बहुत सी बातें समझ आने लगी है, इसमें हमें मुख्य सहायक हाइलाइटेड मुरली ही हुई है। आपका और आपकी टिम का तहे दिल से शुक्रिया। ओम् शांति 🇲🇰

Due to this Feedback & other Responses Received by us

We are everyday sharing links over Here

कोई भी परमात्मा ज्ञान की प्यासी आत्मा,
इस अमूल्य अविनाशी ज्ञान रत्नों से वंचित न रह जाए

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar